प्राचीन भारतीय पारंपरिक पशुचिकित्सा एवं पशुपालन : एक अवलोकन

डॉ. ए. पी. सिंह
प्रमुख अन्वेषक

डॉ. अशोक गौड़
सहायक अन्वेषक

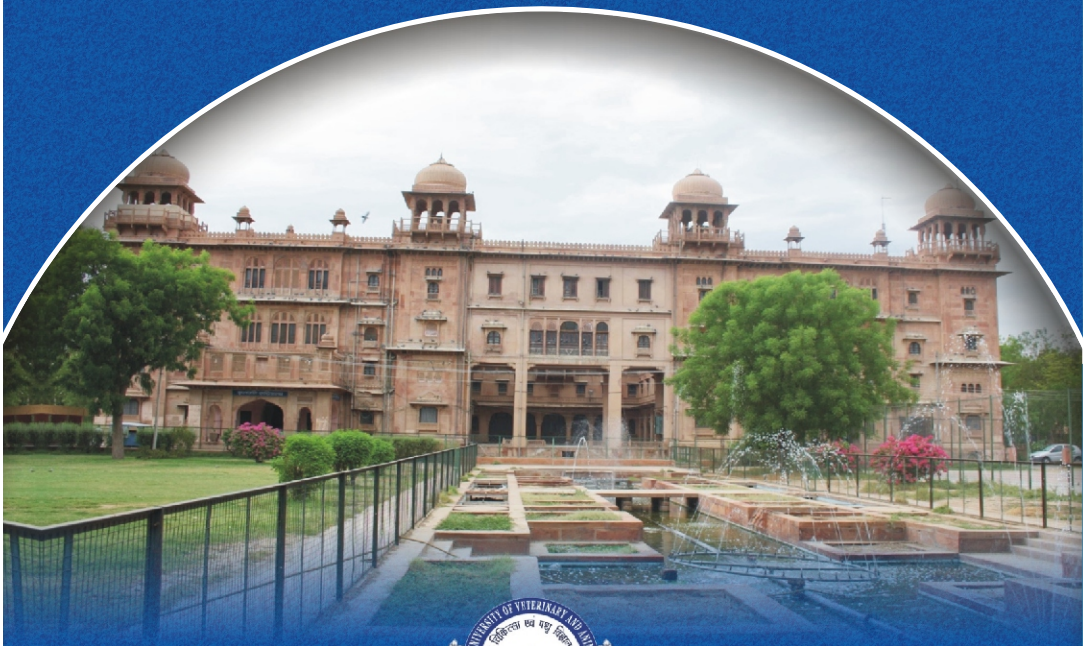

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर-334001 (राजस्थान)

प्राचीन भारत में पशुपालन एक उद्योग की अपेक्षा साहचर्य के रूप में पशुधन रखने की पुरातन पवित्र एवं सांस्कृतिक परंपरा रही है। प्राचीन भारतीय साहित्य मे, वेद, पुराण, ब्राह्मण, रामायण महाभारत आदि में अनेक स्थानों पर जानवरों की देखभाल, स्वास्थ्य प्रबंधन और बीमारी के इलाज के बारे में जानकारी एवं वर्णन मिलते हैं। किन्तु इससे भी पूर्व, लिखित इतिहास से भी पहले पशुपालन एवं पशु चिकित्सा के प्रमाण खुदाई में मिले प्रमाणों, भित्तिचित्र, गुफाचित्र और प्राचीन काल के औजारों से मिलते हैं।

पाषाण काल के मानव द्वारा गुफाओं पर जानवरों और जानवरों की मदद से शिकार करते चित्र उकेरे गये हैं जो कि हमारे पशुओं से पुराने रिश्तों को बयान करते हैं। पाषाण युगीन मनुष्य जानवरों का उपयोग आखेट में करने के साथ–साथ उनके मांस, हड्डियों और खालों का भी उपयोग करने लगे थे।

वर्तमान से पांच छः हजार वर्ष पुरानी विकसित सिन्धु–घाटी सभ्यता के लोग कुत्तों, बैल, भेड़, बकरी, भैंस और हाथी से परिचित थे किन्तु संभवतया घोड़े के उपयोग से अपरिचित थे। मटन, चिकन और मछली उनके प्रिय खाद्य पदार्थ थे और वे दूध, दही और घी का उपयोग किया करते थे।

प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति में गाय पालने की स्वस्थ, पोषक और इससे भी बढ़कर धार्मिक परंपरा रही है और ऋग्वेद में गाय को गौ–धन कह कर संबोधित किया गया है। उस काल में बैलों का बधियाकरण करके खेतों और आवागमन में काम में लेने का वर्णन मिलता है। कृषि प्रधान वैदिक सभ्यता में गाय, भेड़–बकरियों के लिए चारागाह थे और गायों को पूज्य और अघन्य माना गया। वैदिक ऋषियों द्वारा गौवंश को मानव सभ्यता के पोषण, सुरक्षा और विकास के लिए आवश्यक, सुख–सौभाग्य और सम्पन्नता देने वाला और गाय के दूध को अमृत कहा गया है। उसी समय गौ–विज्ञान का उद्भव हुआ। वैदिक काल में ब्राह्मणों और पुजारियों को गौधन के उचित रखरखाव और पशुचिकित्सा की जानकारी थी।

वैदिक ऋचाओं में अनेक औषधीय पौधों के गुणों और उनको औषध के रूप में प्रयोग का वर्णन मिलता है। उसके बाद रामायण और महाभारत काल में आयुर्वेदिक वैद्य अनेक प्रकार के तेलों और आसवों का उपयोग आयुर्वेदिक संहिताओं के

अनुसार मानव और पशुचिकित्सा में किया करते थे। जड़ी–बूटियों और अनेक वृक्षों जैसे नीम, अशोक, अश्वगंधा, कुटज, कदम्ब आदि का मानव चिकित्सा और पशुचिकित्सा में बहुत उपयोग था। हिमालय के तराई भाग में और पर्वतीय क्षेत्रों में जड़ी–बूटियों और वनस्पतियों के विशेष औषधीय गुणों से वैदिक ऋषि–मुनि भली–भांति परिचित थे।

महाभारत काल में मथुरा और ब्रज क्षेत्र गौपालन और गौ–उत्पादक के बहुतायत के लिए विख्यात थे। ऐसा उल्लेख मिलता है कि प्रजाजन मथुरा नरेश कंस को कर के रूप में घी और अन्य गौ–उत्पाद दिया करते थे।

प्राचीन भारत में पशुपालन का महत्त्व होने के साथ–साथ पशुचिकित्सा भी विकसित थी। 600 वर्ष ईसा पूर्व धन्वन्तरी के शिष्य सुश्रुत द्वारा सुश्रुत–संहिता लिखी गई जिसमें कई छोटी और बड़ी शल्य क्रियाओं की विधि एवं उल्लेख मिलता है । वैदिक युग में पशुओं की शल्य क्रिया विकसित थी। उस समय के चिकित्सक ऋषि–मुनि पशुचिकित्सा का भी कार्य भली–भांति किया करते थे। शालिहोत्र द्वारा रचित अश्वायुर्वेद सिद्धांत घोड़ों के उपचार पर लिखी गयी थी। भारत में यह पशुचिकित्सा पर प्राचीनतम ग्रन्थ में से एक है। घोड़ों की चिकित्सा उनके आवागमन एवं सामरिक उपयोग को देखते हुए अत्यंत विकसित थी। घोड़ों का वर्गीकरण एवं अच्छे घोड़ों की उचित देखभाल एवं नस्ल सुधार हेतु वैज्ञानिक प्रजनन का उल्लेख भी मिलता है।

पल्कप्य द्वारा रचित हस्तायुर्वेद हाथियों के उपचार पर चार भागों में लिखा गया था। इसके प्रथम भाग में सामान्य बीमारियों, द्वितीय भाग में शरीर की चोटों और व्याधियों के बारे में, तृतीय भाग में हाथी की शारीरिकी और शल्य चिकित्सा एवं चतुर्थ भाग में हाथियों की चिकित्सा में काम आने वाली विभिन्न औषधियों का सविस्तार वर्णन किया गया है। आयुर्वेद के प्राचीन

संस्कृत ग्रन्थ चरकसंहिता में हाथी, ऊंट, भेड़ व मवेशियों में रेचक औषधियों के संघटकों एवं प्रयोग का वर्णन मिलता है। चरकसंहिता में पशुओं से मनुष्यों में होने वाली बीमारियों जैसे रेबीज का उल्लेख मिलता है। इस संहिता में लगभग 350 विशेष जड़ी–बूटियों का वर्णन मिलता है। प्राचीन भारतीय आयुर्वेद की शाखा रसशास्त्र के ''रसग्रंथो'' में सर्प विष के औषधीय गुणों एवं अन्य औषधियों जैसे पित्त इत्यादि के साथ उपयोग करने पर उनके औषध प्रभावों का उल्लेख किया गया है। अर्धनारीश्वर रस, कालानल रस एवं सूचिकाभरण आदि आयुर्वेदिक औषधियों में सर्प विष एवं संघटक औषधि के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

आयुर्वेद के ग्रंथों में गौ के उत्पाद ''गव्यों'' के विभिन्न औषधीय गुण लिखे गए है। गौमूत्र को ''संजीवनी'' कह कर संबोधित किया गया है। आधुनिक वैज्ञानिक भी गौमूत्र में एंटी–ऑक्सीडेंट और फ्लेवोनॉइड की उपस्थिति की पुष्टि करते हुए इसके औषधीय गुणों से सहमत हुए है।

संक्षेप में, इस बात पर गर्व कर सकते हैं कि आधुनिक चिकित्सा से कहीं पहले, हमारे पूर्वजों ने चिकित्सा शास्त्र में अनुसंधान करके अनेक रोगों के उपचार हेतु औषधियों का विकास किया था। प्राचीन आयुर्वेद ग्रंथों में लिपिबद्ध ये औषधि प्रयोग अनुभव और समय की कसौटी पर कसे गए हैं और समय की मांग है कि इन अनुभवों को आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति द्वारा भी सिद्ध किया जाए जिससे वर्तमान समय में भी चिकित्सा के क्षेत्र में लाभ लिया जा सके।

तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभारः

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) त्रिभुवन शर्मा

निदेशक प्रसार शिक्षा

राजुवास, बीकानेर

–:: सम्पर्क सूत्र ::–

प्रो. (डॉ.) ए. पी. सिंह
प्रमुख अन्वेषक
9414139188

डॉ. अशोक गौड़
सहायक अन्वेषक
9461906288

पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र, बीकानेर-334001(राज.)

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर मो. : 9784105819